सुन्नत की आज्ञापालन-
लोक व परलोक की जमानत

क़ुरान करीम तथा हदीस शरीफ इसलाम के कानून व व्यवस्था कि नीव तथा – है। क़ुरान करीम दस्तूर इ़लाही तथा एक सारांश कानून है। जिस कि तफसील व विस्तार हमें हदीस मुबारक के द्वारा मिलती है। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तथा अए नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! हम ने आप पर क़ुरान उतारा गया, ताकि आप लोगों के समक्ष इसे स्पष्ट कर दें जो इन कि ओर उतारा गया।

(सुरह अन नह्लः 16:44)

क़ुरान करीम में नमाज़ स्थापित करने तथा ज़कात समापन करने का आदेश है, रोज़ों कि फरज़ियत का वर्णन है तथा हज्ज का भी आदेश दिया गया है। परन्तु नमाज़ों कि संख्या व समय तथा रकातों का निर्धारित नहीं किया गया। ज़कात के निसाब (विहित सीमा) कि राशि व मात्रा नहीं बतलाई गई।

रोज़े के मुबाहात व लाभ अधिक मनासिक (अनुच्छेद) हज्ज आदि स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं किए गए।

बल्कि यह सम्पूर्ण विस्तार व तफसील अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के हवाले फरमा दिए। आप कि अदाओं को सुन्नत तथा लोकोक्ति (कथन) व आदेश को शरीअ़त बना दिया। अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- निस्संदेह तुम्हारे लिए रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम में एक उत्तम आदर्श है।

(सुरह अल अह्ज़ाबः 33:21)

भाषांतरः- तथा जो कुछ तुम्हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम दान फरमाएं इसे लो लो तथा जिस से रोक दें उस्से रुक जाओ, तथा से डरते रहो, निश्चय अल्लाह तआ़ला कि यातना बहुत कठिन है।

(सुरह अल हश्रः 59:07)

अल्लाह तआ़ला ने जब अपने कलाम में सरवर कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के अधिकार तथा आप के आदेश कि महत्वपूर्ण को उजागर फरमाया तो इस बात कि ओर भी ध्यान दिला दिया के सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के कथन व लोकोक्ति के आगे किसी को चूं व चरा कि आज्ञा नहीं।

आप जो आदेश फरमाएं वही निर्णायक आदेश है तथा आप जो निर्णय फरमा दें वही अटल निर्णय है, अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- जब अल्लाह तआ़ला तथा इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कुछ आदेश फरमा दें तो इन्हें अपने मामले में कुछ अधिकार रहे।

(सुरह अल अह्ज़ाबः 31:36)

अल्लाह तआ़ला ने सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को सम्पूर्ण निर्माण कि ओर नबूवत व रिसालत कि शान के साथ --- फरमाया तथा आप का आज्ञापालन व अनुकूलता को अनिवार्य व अवश्य घोषित दिया।

आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के कथन को उल्लेख तथा कर्म को सुन्नत बना दिया तथा आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि प्रिय जीवन को सम्पूर्ण कायनात के लिए आदर्श बनाया तथा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) कि आज्ञा के पालन को अपनी आज्ञा के पालन घोषित किया।

सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन ही अल्लाह कि आज्ञापालन है

जैसा के अल्लाह तआ़ला ने आदेश फरमायाः-

भाषांतरः- जिस ने रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा का पालन किया तो निश्चय उसने अल्लाह तआ़ला कि आज्ञा का पालन किया।

(सुरह अन निसाः 04:80)

हर मानव कि इच्छा होती है के वह उन्नति व प्रगति के मार्ग व राह पर --- रहे। इसे कुशल व भलाई प्राप्त हो तथा इस का जीवन आनन्ददायक रहे। इस के साथ-साथ एक मुसलमान के लिए यह चिन्ता भी अत्यन्त अवश्य है के वह सही विश्वास व अखीदा अपनाए तथा नेक कर्म पर स्थिर रहे।

अल्लाह और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन व फर्माबरदारी करता रहे तथा सुन्नतों पर अ़मल करता रहे। इस नीव पर वह संसार व परलोक में सफल हो जाता है।

मुसतफा आज्ञापालन- अल्लाह कि मुहब्बत कि दलील

यहूद व ईसाईने यह दावा किया था के वह अल्लाह तआ़ला के महबूब हैं। इन के इस दावे पर क़ुरान करीम ने इस बात कि स्पष्टीकरण (निर्मलीकरण व विशुद्धीकरण) कर दी के इन का यह दावा करना इसी समय मान्य समझा जाएगा जब के इस कि दलील (सबूत) में वह हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा का पालन करें। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- अए हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! आप फरमा दिजीएः यदि तुम अल्लाह तआ़ला से प्रेम करते हो ते मेरी आज्ञापालन करो। अल्लाह तआ़ला तुम से भी प्रेम करेगा तथा तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा। अल्लाह तआ़ला बडा क्षमाशील व दयावान है।

(सुरल आले इ़मरानः 03:31)

इस आयत मुबारक में प्रेम व मुहब्बत तथा अनुपालन व आज्ञापालन का वर्ण किया गया है तथा यही वह 2 चीज़ें हैं जो बन्दे मोमिन के लिए लोक परलोग कि उन्नति तथा हर 2 जहाँ कि भलाई व कुशलता के प्राप्त के लिए काफी है।

एक बन्दे मोमिन कि इच्छुक अभिलाषा होती है के वह अपने रब से प्रेम करे तथा इस कि प्रसन्नता प्राप्त करे, परन्तु यह मुहब्बत इस समय तक एक ओर से है तथा अपर्याप्त व अपूर्ण है।

जब तक के वह मुहब्बत व प्रेम के आवश्यकता पर कर्म ना करें तथा अपने स्वामी सरवर कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि पैरवी व पालन ना करें।

वर्णन आयत मुबारक में अल्लाह कि मुहब्बत कि आवश्यकता यही बताया गया के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन की जाए। हर पल आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की पैरवी व अनुसरण होती रहे तथा आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) कि मुबारक अदाओं व आचरण को अपना जाए।

बन्दे मोमिन का हर कदम सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन आदर्श कि रोशनी में उठे। इस कि बरकत यह होगी के अल्लाह तआला उसे अपना महबूब (प्रियतम व दुलारा) बनाएगा। अभि वर्णन कि गई आयत से यह बात स्पष्ट व उजागर हुई के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि अदाओं को अपनाने वाला अल्लाह तआला का महबूब हो जाता है।

अल्लाह तआ़ला इस पर रहम व करम का ऐसा मामला फरमाता है के इस के पापों को भी क्षमा फरमा देता है। हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन व फर्माबरदारी कि महत्वपूर्ण को उजागर करते हुए अल्लाह तआ़ला ने वर्णन आयत करीमा के तुरंत बाद एक और स्थायी आयत में आदेश फरमायाः-

भाषांतरः- अए हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम आप फरमा दिजीए! अल्लाह तआ़ला और रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन करो यदि वह फिर गए तो अल्लाह तआ़ला काफिररों को प्रेम नहीं करता।

(सुरह आले इ़मरानः 03:32)

इस आयत मुबारक में पालनहार ने अपना आज्ञापालन के साथ अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम अनुपालन का भी आदेश फरमाया। मोमिन को जहाँ अल्लाह तआ़ला कि आज्ञापालन का आदेश दिया गया। वहीं नबी करीम के अनुपालन की गई।

क्यों के अल्लाह के आदेश कि समापन सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बतलाने से ही होगी। अल्लाह तआ़ला कि अनुरूपता, नबी अकरम के आज्ञापालन कि स्थिति में ही सम्भव है।

तथा यदि बन्दा सच्चाई में अल्लाह कि मुहब्बत व प्रेम अपने हृदय में रखता है तो सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि पैरवी कि आवश्यकता को भी पूरा करना होगा।

यदि किसी ने हबीब अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन व पैरवी से --- की तथा मुंह फेर लिया तो गोया इस ने अल्लाह तआला से सत्य रूप से मुहब्बत व प्रेम नहीं किया। वह मुहब्बत का दावा तो कर रहा है, परन्तु इस ने कोई दलील पेश नहीं की।

वह मुहब्बत का प्रदर्शन तो कर रहा है परन्तु इस कि आवश्यकता पूरा नहीं किया तथा इस के कारण से इस का शुमार कुफराने-नेअमत करने वालं में हो गया। (*अलइयाज़ु बिल्लाह*)

सुन्नत कि आज्ञापालन तथा सहाबा किराम का प्रदर्शित उदाहरण

हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने इन अल्लाह तआला के आदेशों के पेश नज़र अपने पालन करने कि भावना का किस प्रकार प्रकट किया। इन के नज़दीक फरमान रिसालत कि कया उच्च प्रतिष्ठा थी।

सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आदेश का इन दिलों में कया पवित्रता व सतीत्व थी। सहीह मुसलिम शरीफ में वर्णन एक घठना से इस बात कि कुछ धारणा लगाया जा सकता है।

हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि बारगाह में उपस्थित थे। ए सहाबी जिन्हों ने पुरुष के लिए सोना पहन्ने से संबंधित शरीअत का आदेश का ज्ञान ना था।

पावन बारगाह में उपस्थित हुए, इस समय वह अपने हाथ में सोने कि अँगूठी पहने हुए थे, सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अप्रसन्न व नाराज़गी का प्रदर्श फरमाया तथा इरशाद फरमाया के यह क्या है?

तथा इस अँगूठी को इन के हाथ से निकाल कर फैंक दिया, जब सरवर कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीप ले गए, संग्रहण पूर्ण हुआ तो इन के किसी साथी ने इन से कहाः

भाषांतरः- अपनी अँगूठी ले लो तथा किसी और प्रकार इस से लाभ उठा लो, इन्हों ने कहाः नहीं खुदा कि क़स्म! मैं उसे कभी नहीं लुँगा। जब के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उसे फैंक दिया है।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 5593)

जब सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस अँगूठी को पैंक दिया था तो इस का अर्थ ऐसा तो नहीं था के नफ्स अँगूठी बुरी है। बल्कि कारण यह था के पावन शरीअ़त में पुरुष के लिए का पहन्ना हराम है।

इस के लिए सोना खरीदना मना नहीं तथा ना सोने को अपने पास रखना मना है। किन्तु पुरुष के लिए उस का पहन्ना जाइज़ नहीं। अन्य सहाबा किराम ने बी यही समझा था।

तभी तो इन्हों ने सुझाव दिया के अँगूठी ले लें। उसे अपने घर कि महिलाओं तथा --- को पहनाया जा सकता है या उसे बेच कर के इस का मूल्य से अपने लिए कोई चीज़ खरीदी जा सकती है।

यह तो सम्भव है, प्रिय शरीअ़त ने इस कि तो आज्ञा दी है, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने इन से कहा के अँगूठी उठा लो तथा उसे पहने बिना किसी जाइज़ तरीक़े से लाभ प्राप्त कर लो!

ध्यान दीजिए! वह सहाबा का इ़मान कया कहता है, इन कि सन्हे व मुहब्बत कि भावना कया प्रकट करती है। इन के नज़दीक अपने आखा व मौला का पालन तथा आप के आदेश पर जानिसार का साहस कैसा है?

कहने लगेः खुदा कि क़स्म! मैं कभी इसे नहीं लुँगा। अल्लाह के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इसे फैंक दें तथा मैं ले लुँ, यह कैसे सम्भव हो सकता है?

इस आदर व सम्मान करने वाले सहाबी ने यह नहीं देखा के इस अँगूठी कि धनी महत्व कया है तथा बाजार में इस का कितनी मूल्य है? बल्कि इन कि चरित्र ने तथा इन कि अखीदत कि भावना व साहस ने यह उत्तर दिया के सरवर कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जिस चीज़ व वस्तु को फैंक दें इस को मोल तथा मूल्य ही कया हो सकता है।

इस साहस के अखीदत का कारण यही था के वह जानते थे के रहमतुल लिलआ़लमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन ही अल्लाह तआ़ला कि आज्ञापालन है।

आप कि फर्माबरदारी ही अल्लाह तआ़ला कि फर्माबरदारी है तथा यही पालन व अनुकूलता व पैरवी हमारे लिए अल्लाह तआ़ला कि मुहब्बत व प्रेम सिद्ध करने का सफल माध्यम है। जिस के द्वारा हम अपने उद्देश्य व लक्ष्य को पा सकते हैं।

नबी का पालन हर स्थिति में ---

मुखतार कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आदेश कि अल्लाह कि बारगाह में कैसा दर्जा व प्रतिभा है तथा दरबार खुदा में आप के लोकोक्ति का कया स्थान व स्तर है? हम इस मुबारक आयत के बखूबी समझ सकते हैं। अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः- औ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल के निमन्त्रण पर उपस्थित हो जाओ! जब रसूल तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हे जीवन प्रदान करनेवाली है।

(सुरल अल अनफालः 08:24)

मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तुम्हें कोई आदेश फरमाएं या पूछें तो तुम आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के निमन्त्रण पर लब्बैक कहो, पावन सेवा में उपस्थित हो जाओ। यही चीज़ तुम्हारे लिए – तथा कामरानी कि ज़मानत (उत्तरदायी) है।

क्यों के वह तुम्हें बुलाते हैं तथा कोई आदेश फरमाते हैं तो इस लिए नहीं के कठिनाई में डालें। बल्कि वह तुम्हें भलाई व कुशलता दान करते हैं। जीवन प्रदान करनेवाली हैं तथा तुम्हारा जीवन को कृपा दान करते हैं। वर्णन

आयत शरीफ कि तफसीर में सहीह् बुखारी शरीफ में एक घटना का वर्णन किया गया हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु सईद बिन मआला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वह फरमाते हैं के मैं नमाज़ अदा कर रहा था। मेरे पास से सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ ले गए, तथा आप ने मुझे अपनी बारगाह में याद फरमाया तो मैं उपस्थित नहीं हुआ यहाँ तक के मैं नें नमाज़ पढ ली। इस के बाद आप कि पावन सेवा में उपस्थित हो गया। सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः ऐ अबु सईद! तुम्हें उपस्थित होने से किस चीज़ ने रोका था? कया अल्लाह तआला ने यह नहीं फरमाया है? भाषांतरः- ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला और रसूल के बुलाने पर उपस्थित हो जाओ जब वह तुम्हें बुलाएं।

(सहीह् बुखारी, ह्दीस संख्याः 4647)

हज़रत अबु सईद बिन मआला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़ अदा कर रहे थे तथा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इन्हीं नमाज़ कि स्थिति में इच्छा कर के बताया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन करना ही अल्लाह तआला का आज्ञापालन है।

आयत करीमा में अल्लाह तआ़ाला तथा इस के सम्मान वाले रसूल सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम कि पुकार पर लब्बैक कहने का आदेश दिया गया तथापि अल्लाह तआ़ाला कि सूचना हर कोई सुन नहीं सकता। पता चला के इस आदेश का उद्देश्य सरकार कायनात सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम के आदेश तथा आप के फरमान का महत्व बतलाना है।

अर्थात क़ुरान करीम में कई आयत शरीफ हमें ऐसी मिलती हैं जिस में अल्लाह तआ़ाला ने अपनी आज्ञापालन व अनुकूलता के साथ हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन का आदेश फरमाया तथा कई स्थान पर इस के अनेक लाभ व बरकतों का वर्णन फरमाया। बाज़ आयत शरीफ पेश किया जा रहा हैः-

आज्ञापालन- व्यर्थ नहीं जाएगी

मोमिन जब ईमान व विश्वास कि रोशनी में ईमानदारी व अनुराग के साथ कोई नेकी व पुण्य करता है, कोई अच्छा कर्म करता है तो अल्लाह तआ़ाला इसे इस के कर्म कि पूरी-पूरी प्रतिफल व पुरस्कार दान फरमाता है तथा इस के पुण्य व सवाम में किसी प्रकार कि कमी नहीं फरमाता।

सुरह अल हुजुरात में अल्लाह तआ़ाला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तथा यदि तुम अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा का पालन करो तो वह तुम्हारे कर्मों में से तुम्हारे लिए कुछ कम न करेगा। निश्चय ही अल्लाह तआ़ाला बडा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

(सुरह अल हुजुरातः 49:14)

रसूल कि आज्ञापालन- हिदायत के प्रतीक

सरवर कौनैन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन व फर्माबरदारी करना हिदायत कि ज़मानत है। जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तथा यदि तुम इस रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञ का पालन करोगे तो मार्ग व हिदायत पा लोगे।

(सुरह अन नूरः 24:54)

आज्ञापालन- ईमानवालों के लक्षण

अल्लाह तआ़ला ने सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा के पालन को ईमान वालों का स्तर बनाया है तथा आप कि अनुपालन व अनुरूपता को ईमानवालों का विशेष रूप घोषत दिया है। अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तथा मुसलमान पुरुष तथा मुसलमान महिलाएं, वे सब परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। वह भलाई का आदेश देते हैं, तथा नमाज़ क़ायम करते हैं, तथा ज़कात देते हैं, तता अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन करते हैं। ये वे लोग हैं, जिन पर अल्लाह तआ़ला शीघ्र दया व रहम करने वाला है। निस्संदेह अल्लाह तआ़ला प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।

(सुरह अत तौबाः 09: 71)

आज्ञापालन- बन्दे कि सफलता का संरक्षक

अल्लाह तआ़ला तथा इस के हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आदेश मान्ना, इन के बुलाने पर लब्बेक कहना तथा इन के निर्णय को स्वीकार करना ईमानवालों का स्वभाव होता है।

जिस पर अल्लाह तआ़ला इन्हें सफलता व प्रगति से संभोदित करता है। सुरह अन नूर में आदेश हैः-

भाषांतरः- अवश्य ईमानवालों कि बात यही है के जब इन्हें अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि ओर बुलाया जाता है ताकि वह इन के बीच निर्णय फरमाएं तो वह कहते हैः हम ने सुन लिया तथा आज्ञापालन किया तथा यही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

(सुरह अन नूरः 24:*51)*

आज्ञापालन पर मुक्ति व सफलता कि ज़मानत

पालनहार तथा इस के नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि अनुकूलता करना सफलता का साधन तथा कुशलता का माध्यम है। अल्लाह तआ़ला फरमाते हैः-

भाषांतरः- तथा जो अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा का पालन करें तथा अल्लाह तआ़ला से डरता रहे और सीमाओं को ध्यान में रखे तो यही लोग सफल हैं।

(सुरह अन नूरः 24:52)

भाषांतरः- तथा जो अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन करें, निश्चय उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है।

(सुरह अल अहज़ाबः 33:71)

अल्लाह रहमान व रहीम तथा नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन व फर्माबरदारी राहत व रहमत को अपने दामन में भरने का बेहतर माध्यम है। अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- तथा अल्लाह तआ़ला और रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आज्ञाकारी बनो! ताकि तुम पर रहम व दया किया जाए।

(सुरह आले इमरानः 03:*132)*

मानव हर समय अल्लाह कि रहमत का उम्मीदवार होता है। सवेरे व शाम रहमत के उत्पन्न के लिए दुआएं व प्रार्थना करता है। अल्लाह तआ़ला ने बतलाया के सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन से अल्लाह कि रहमत का माध्यम है। आप कि फर्माबरदारी अल्लाह के दान का द्वारा है।

रसूल अल्लाह कि अनुकूलता पर इनाम

अल्लाह तआ़ला तथा इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन करने वाले नेक व भले लोग को अल्लाह तआ़ला पगम्बरों, सिद्दीखीन, शहीदों तथा सालेहीन कि संगत व सोहबत से संबोधित फरमाता है तथा इन कि धन्य नज़र अनुमन्त्रित फरमाता है। अर्थातः अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- तथा जो अल्लाह तआ़ला और रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा का पालन करता है, तो वे ऐसे लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह तआ़ला की न् रही है (यथा)- वे नबी, सिद्दीक़, शहीद तथा सालेहीन, तथा वे कितने अच्छे साथी हैं।

(सुरह अन-निसाः 04:69)

आज्ञापालन- जन्नत में प्रवेशन का कारण

सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन व अनुकूलता करने वाले व्यक्ति को अल्लाह तआ़ला अपनी सन्तुष्टी व प्रसन्नता से संबोधित करता है तथा इसे जन्नतुल-फिरदौस में प्रवेशन दान रमाता है, अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- तथा जो अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञा का पालन करता है, अल्लाह इसे ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बहती हैं किन्तु जो मुँह फेरेगा उसे वह दुखद यातना देगा।

(सुरह अल फतहः 48:17)

अल्लाह तआ़ला के इन आयात से हमें मालूम हो रहा है के अल्लाह तआ़ला जब अपने बन्दों को उद्देश्य लक्ष्य पर --- पाता है। इन्हें अपनी और अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन व फर्माबरदारी पर अटल देखता है तो अपने करम व कृपा से इन्हें असंख्य व अगणनीय वरदान व नेअ़मतों से धनवान बना देता है।

अपनी रहमत कि चादर को इन पर छायामात्र फरमाता है, इन पर रहमत प्रकट फरमाता है। क़ैर व भलाई तथा सुधारता व सफलता से इन के दामन को भर देता है।

जब इन के कर्म में अनुराग व विश्वसनीयता को शामिल पाता है तो इस का सम्पूर्ण प्रतिफल दान फरमाता है तथा इन के लिए हिदायत कि रोशन राहें हमवार कर देता है।

संसार व परलोक में इन्हें मुक्ति व सफलता से संबोधित फरमाता है। अल्लाह का करम अतिउत्तम करम यह के इन का ठिकाना जन्नत जैसा उच्च स्थान बता देता है। इन्हें, नबीयों (अलैहिस सलाम), सिद्दिखीन, शहीदों तथा सालेहीन (अच्छे व भले लोग) कि धन्य संगत व सोहबत नसीब होती है।

आवश्यकता इस बात कि है के हम अपने भीतर आज्ञापालन कि भावना पैदा करें। हर खदम पर आज्ञा के पालन करने कि कोशिश करें। हमारा उठना, बैठना, चलना फिरना सुन्नतों कि रोश्नी में हो। हमारा चाल-चलन, हमारा

रहन-सहन सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैह वसल्लम के आदेश के अनुसार हो।

हमारे जीवन में कोई कर्म सुन्नत के विरुद्ध ना हो। मुलाकात व हाथ मिलाना, वार्तालाप व खानी-पीना सुन्नतों के अनुसार हो। हमारी हर हरकत व शान्ति, हमारा हर कथन व कर्म सुन्नतों के अनुसार हो तथा हम अपना सम्पूर्ण जीवन अल्लाह तआ़ला और इस के प्यारे रसूल नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि फर्माबरदारी व आज्ञापालन में गुज़ारने के लिए तैयार हो जाएं।

निस्संदेह अल्लाह तआ़ला हमें अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के द्वारा आज्ञापालन व अनुकूलता कि सम्पूर्ण बरकतों व वरदान से संबोधित फरमाएगा।

अल्लाह तआ़ला हमें अपने अहकाम पर स्थापित रहने कि मार्गदर्शन प्रदान फरमाए तथा अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सुन्नतों तथा आप के पावन नक्ष-क़दम पर चलने कि कृपा दान फरमाए।

आमीन